

डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो, यीशु से पहले यहूदी धर्म, सत्र 6, यूनानी शासन के अधीन यहूदी

© 2024 टोनी टॉमसिनो और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. एंथनी टोमासिनो और यीशु से पहले यहूदी धर्म पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6 है, यूनानी शासन के तहत यहूदी।

तो हम सिकंदर महान और उसकी मृत्यु के बाद हुई गड़बड़ी के बारे में बात कर रहे हैं।

खैर, बस इसके बारे में थोड़ा सा संक्षेप में बताने के लिए, हम यहाँ जो देखते हैं वह संघर्षों की एक श्रृंखला है जिसे डायडोची के युद्ध के रूप में जाना जाता है, जो वास्तव में 321 से 301 ईसा पूर्व तक घुमावदार है, हालांकि 301 वास्तव में संघर्ष का अंत नहीं है, यह उस बिंदु पर थोड़ा शांत हो गया। तो, 301 ईसा पूर्व तक, हमारे पास पूर्व में तीन मुख्य शक्तियाँ थीं, और ये शक्तियाँ थीं लिसिमाचस, जो मैसेडोन से एशिया माइनर तक विस्तार करने में कामयाब रही। हमारे पास सेल्यूकस है, जिसने यहाँ पुराना फ़ारसी साम्राज्य रखा, और हमारे पास टॉलेमी है, जिसने मिस्र और फ़िलिस्तीन के क्षेत्रों तक का विस्तार किया।

तो, 281 में, सेल्यूकस यहाँ लिसिमैचस को हराने में कामयाब हो जाता है, और वह एशिया माइनर को अपने राज्य में शामिल कर लेता है। अब, इस बिंदु पर, सेल्यूकस खुद को थोड़ा ज़्यादा आगे बढ़ाने लगा है, और वह कुछ खोने वाला है।

तो, इस समय, सेल्यूकस को लग रहा है कि उसके लिए अपने साम्राज्य के पूर्वी हिस्सों पर कब्ज़ा करना मुश्किल होता जा रहा है। तो, उसने 305 ईसा पूर्व तक अपनी भारतीय संपत्ति खो दी थी, और 248 तक सभी फ़ारसी संपत्ति खो दी थी।

तो, इस समय, उसके साम्राज्य में मुख्य रूप से मेसोपोटामिया और एशिया माइनर और सीरिया के क्षेत्र शामिल थे। वह अंततः बेबीलोन को भी खोने जा रहा है। इसलिए, इसे एक-एक करके खत्म किया जाएगा।

अब, हमारे पास ये दो प्रमुख व्यक्ति हैं जो अगली कुछ शताब्दियों में यहूदियों के जीवन में एक बड़ी भूमिका निभाने जा रहे हैं। जिन लोगों पर वे शासन करते हैं उनके प्रति उनके दृष्टिकोण बहुत ही विपरीत हैं। टॉलेमी। सोटर।

टॉलेमी। टॉलेमिक साम्राज्य का शासक है, जो मिस्र में स्थित है। हम पाते हैं कि इन शुरुआती टॉलेमिक शासकों का मिस्र के लोगों, मूल मिस्र के लोगों के प्रति बहुत ही द्वेषपूर्ण रवैया था। टॉलेमी के शुरुआती शासन में, किसी भी मूल मिस्रवासी को किसी भी तरह का सार्वजनिक पद धारण करने की अनुमति नहीं थी।

केवल मैसेडोनिया के लोगों को ही सार्वजनिक पद पर रहने की अनुमति थी। मिस्र के लोगों को सहायक प्रकार की भूमिकाओं को छोड़कर सेना में सेवा करने की अनुमति नहीं थी। उन्हें बड़ी संपत्ति रखने की अनुमति नहीं थी।

और फिर भी, उल्लेखनीय रूप से, मिस्र के लोग, मूल मिस्र के लोग, इन लोगों को फिरौन के उत्तराधिकारी के रूप में मानते हैं। हो सकता है, आप जानते हों, अतीत में फिरौन द्वारा उनके साथ इसी तरह से दुर्व्यवहार किया गया हो। और इसलिए, उन्होंने इसे एक सामान्य बात मान लिया।

लेकिन यह काफी समय तक एक गहरी दुश्मनी की तरह रहा। लेकिन ऐसा लग रहा था कि टॉलेमी जितना ज़्यादा दुःख मूल मिस्रियों को दे रहे थे, वे उतनी ही ज़्यादा दयालुता, प्रेम और श्रद्धा के साथ जवाब दे रहे थे। आखिरकार, इसने टॉलेमी को जीत लिया।

टॉलेमी ने वास्तव में, बाद के दिनों में, मिस्र की संस्कृति को अपनाया और सच्चे प्राचीन मिस्र के फिरौन बन गए। इसलिए हम सभी ने क्लियोपेट्रा और जिस तरह से उसने खुद को एक मिस्र की राजकुमारी के रूप में चित्रित किया, उसके बारे में सुना है। आप कह सकते हैं कि यह टॉलेमी पर पूर्व का जादू था।

अब, सेल्यूकस और उसके उत्तराधिकारियों ने यहाँ एक अलग तरह का रास्ता अपनाया। सेल्यूकस का अपने राज्य के लोगों के प्रति ज़्यादा पितृसत्तात्मक रवैया था। सिकंदर के सभी अधिकारियों में से जिन्होंने इन फ़ारसी महिलाओं से शादी की थी, सेल्यूकस एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसने अपनी पत्नी को तलाक नहीं दिया था।

इसके अलावा, उन्होंने तय किया कि वे पूर्व के लोगों को ग्रीक संस्कृति से आशीर्वाद देना चाहते हैं। और इसलिए उनके पास ऐसी नीतियाँ थीं जो मूल निवासियों को अपने शहरों को अधिक ग्रीक प्रकार के मॉडल के अनुसार पुनर्व्यवस्थित करने, ग्रीक भवन परियोजनाएँ करने, जिमनासिया स्थापित करने जैसे काम करने के लिए प्रोत्साहित करती थीं, जो ऐसी जगह नहीं थी जहाँ आप बास्केटबॉल खेलते थे। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ आप ग्रीक संस्कृति सीखते थे, आप जानते हैं, उत्कृष्ट दिमाग और उत्कृष्ट शरीर जैसी चीज़ें, आप जानते हैं।

शहर खुद को ग्रीक शैली के पोलिस में परिवर्तित करके कर में छूट प्राप्त कर सकते थे, एक ऐसा शहर जो ग्रीक सिद्धांतों के अनुसार संगठित था और अपनी वास्तुकला, सरकारी व्यवहार आदि में उन सिद्धांतों को शामिल करता था। इस तरह, सेल्यूसिड्स ग्रीक संस्कृति के प्रसार को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहे थे, लगभग उन लोगों के साथ साझेदारी में काम कर रहे थे जिन पर वे शासन करते थे।

इसलिए, शुरू में, यहूदी टॉलेमीज़ के नियंत्रण में आ गए। और हम यहाँ यहूदिया की बात कर रहे हैं, बेशक। इस समय टॉलेमीज़ मूल निवासियों के प्रति बहुत ही तिरस्कारपूर्ण थे, और वे उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए बहुत कम प्रयास कर रहे थे।

लेकिन दूसरी ओर, वे उनके जीवन में भी बहुत हस्तक्षेप नहीं करते थे। तो, इसका मतलब यह था कि यहूदिया में यहूदी अपनी मर्जी से अपना जीवन जीने के लिए काफी हद तक स्वतंत्र थे। उन्हें निश्चित रूप से कर देना पड़ता था, और कर बहुत ज़्यादा थे क्योंकि टॉलेमी बहुत लालची थे।

लेकिन ज़्यादातर मामलों में, वे अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार व्यवस्थित कर सकते थे। जाहिर है, यहूदिया में उनके उच्च पुजारी ही सबकुछ चला रहे थे। धर्म की स्वतंत्रता जारी रही।

यहूदी अपने यहूदी कानूनों का पालन कर सकते थे, अपने सब्बाथ को छोड़ सकते थे, अपने कोषेर भोजन खाना जारी रख सकते थे आदि आदि आदि। और टॉलेमी लोग थोड़े अजीब थे। लेकिन हे, जो भी हो।

आप आप ही रहें, यार। तो वैसे भी, इस युग में होने वाली वास्तविक समस्याओं में से एक और रोमन सम्राट ऑगस्टस के समय तक एक समस्या बनी रही, वह थी कर खेती की विधि जिसका उपयोग टॉलेमीज़ द्वारा किया जाता था। जिस तरह से यह काम करता था वह यह है कि प्रत्येक, ठीक है, कराधान प्रणाली एक बहु-स्तरीय चीज़ थी जहां आपके पास स्थानीय लोग और अधिकारी होते थे जो अपने स्थानीय क्षेत्रों के लिए कर बढ़ाने के प्रभारी होते थे।

फिर वे कर का पैसा उस व्यक्ति को देते थे जो उस क्षेत्र का प्रभारी होता था। वे इसे एक और व्यक्ति को देते थे जो एक बड़े क्षेत्र का प्रभारी होता था। वे पैसे को साम्राज्य में ले जाते थे और वापस मिस्र में टॉलेमीज़ के पास ले जाते थे।

अब, इस प्रणाली का दुरुपयोग इस तरह से हुआ कि उच्च अधिकारी कहते थे, अगले स्तर तक पहुँचने के लिए आपको इतना पैसा जुटाना होगा। तो, मान लीजिए कि टॉलेमी किसी स्थानीय मजिस्ट्रेट से कहते हैं, मैं चाहता हूँ कि आपका क्षेत्र इस साल हमारे लिए 500 टैलेंट सोना पैदा करे। खैर, स्थानीय व्यक्ति जाता है, और वह अपने नीचे के व्यक्ति से कहता है, ठीक है, हमें 600 टैलेंट सोना जुटाना होगा।

वह 500 डॉलर लेता है, सेल्यूसिड्स को देता है और बाकी 100 डॉलर जेब में रख लेता है। खैर, उसके नीचे बैठा आदमी अपने अधीनस्थों से कहता है, उनमें से हर एक, वह कहता है, ठीक है, आप में से हर एक 150 टैलेंट सोना जुटाने के लिए जिम्मेदार है। और फिर, ज़ाहिर है, वह उन सभी पैसों को जेब में रख लेता है जो उन्हें वास्तव में प्राप्त करने के लिए सौंपे गए थे।

यह तब तक चलता रहा जब तक कि स्थानीय लोग लोगों को डरा-धमकाकर उनसे जितना संभव हो सके उतना वसूलने लगे। इसलिए इस तरह की व्यवस्था को बर्दाश्त किया गया। ऐसा लगता था कि यह कर वसूलने वालों को पुरस्कृत करता था और उन्हें अपने कर्तव्यों से एक निश्चित मात्रा में लाभ प्राप्त करने की अनुमति देता था।

बेशक, इसने उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति बहुत मेहनती होने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि वे अपनी जेबें अच्छी तरह से भरने में सक्षम थे। लेकिन इसने विशेष रूप से निचले स्तर पर रहने वाले लोगों में बहुत अधिक नाराजगी पैदा की। इस युग की एक अद्भुत खोज, जिसने हमें टॉलेमी

के अधीन यहूदियों के बारे में थोड़ी जानकारी दी है, पपीरी का एक संग्रह है जिसे हम अब ज़ेनॉन पपीरी के रूप में जानते हैं।

अब, हमारे पास इस अवधि के दौरान यहूदियों के बारे में बहुत ज़्यादा जानकारी नहीं है। बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। लेकिन ज़ेनॉन पपीरी हमें कम से कम उस समय के वित्तीय प्रशासन के बारे में थोड़ी जानकारी देती है।

इन पपीरी की खोज 1914 में दो मिस्र के लोगों ने की थी जो खाद के लिए खुदाई कर रहे थे। और पपीरी मिस्र में एक जगह पर पाई गई थी। और हमें इस बात का अंदाज़ा है कि यह कहाँ था, लेकिन हम नहीं जानते कि यह अब कहाँ है।

तो, यह एक बहुत बड़ा भंडार था। लगभग 1,800 पपीरी मिले। और यह ज़ेनॉन या ज़ेनो नाम के एक व्यक्ति के निजी कागजात थे, जैसा कि उसे कभी-कभी बुलाया जाता था।

वह अपोलोनियस का अधिकारी था, जो टॉलेमी द्वितीय का मुख्य राजकोष अधिकारी था, जिसने 284 से 246 ईसा पूर्व तक शासन किया था। इन ग्रंथों में उनके करियर के शुरुआती दौर में उनकी यात्राओं और उनके व्यापारिक लेन-देन का विवरण है। कुछ पुराने ग्रंथों में फिलिस्तीन में उनकी यात्राओं और वहाँ उनके काम के बारे में बताया गया है।

बाद में, उन्होंने मुख्य रूप से मिस्र में काम किया। लेकिन हमारे पास कुछ निजी पत्र हैं। हमारे पास एक ऐसा पाठ है जिसने बहुत ध्यान आकर्षित किया है, वह एक दासी लड़की की बिक्री का बिल है।

एक ऐसा पेपर भी है जिसमें वह यौन तस्करी के लिए कुछ युवतियों की तस्करी और इस तरह की कुछ अन्य चीजों की जांच कर रहा था। तो, कुछ मायनों में, कुछ दिलचस्प चीजें हैं। लेकिन अधिकांश भाग के लिए, डेड सी स्क्रॉल की तुलना में, वास्तव में उबाऊ है।

आप जानते हैं, मेरा मतलब है, ये ज़्यादातर वित्तीय रिकॉर्ड हैं। लेकिन यहाँ एक बात जो हमें बहुत दिलचस्प लगी, वो ये कि फिलिस्तीन में जिन लोगों से इस आदमी को बहुत ज़्यादा निपटना पड़ रहा था, उनमें से एक टोबियास नाम का व्यक्ति था। और यह एक ऐसा नाम है जो हमें नहेमायाह की किताब से परिचित है।

क्योंकि यह टोबियास, जिसे नहेमायाह की किताब में अम्मोनी दास कहा गया है, उसका मतलब किसी भी तरह से यह नहीं था कि वह सचमुच एक दास था। यह एक अपमान था। वह वास्तव में एक बहुत बड़ा अधिकारी था, जाहिर है।

इस टोबियास ने यरूशलेम की दीवार के निर्माण का विरोध किया था, और नहेमायाह के पास उसके बारे में कहने के लिए कुछ भी अच्छा नहीं था। खैर, हम इस आदमी का नाम, या उसके वंशजों में से एक, को इन ग्रंथों में फिर से यहाँ आते हुए पाते हैं। और फिर, देखिए, वह अभी भी अम्मोनी है।

टोबियास परिवार का स्पष्ट रूप से एक राजवंश है, जो इस समय तक बहुत अमीर हो गया है। वे इस क्षेत्र की राजनीति में भूमिका निभाते रहेंगे। यहाँ कुछ पपीरी की कुछ तस्वीरें हैं, और आप देख सकते हैं कि उनमें से कुछ वास्तव में उल्लेखनीय रूप से अच्छी तरह से संरक्षित हैं।

लेकिन जैसा कि मैंने कहा, वे विशेष रूप से दिलचस्प नहीं हैं। वे हमें इस बारे में बहुत कुछ नहीं बताते हैं, जैसे कि क्षेत्र का धार्मिक विकास या उस तरह की कोई भी चीज़। वे हमें इस बारे में बताते हैं कि अनाज किस कीमत पर बिक रहा था।

वे हमें बताते हैं कि दास किस कीमत पर बेचे जाते थे, वेतन क्या लिया जाता था, उस समय मिस्र साम्राज्य का राजस्व कितना था। इस तरह की सभी बातें उन लोगों के लिए बहुत दिलचस्प हैं जो उस समय साम्राज्य के इतिहास को विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन इन ग्रंथों में यहूदियों के बारे में वास्तव में बहुत कुछ नहीं बताया गया है।

तो, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, स्थानीय सरकार स्पष्ट रूप से उच्च पुजारी के नियंत्रण में थी। मैं कहूंगा कि हाल ही में कुछ विद्वानों द्वारा इसे चुनौती दी गई है, लेकिन मैं अभी भी आश्वस्त हूँ कि उच्च पुजारी ने अधिकांश समय राज्यपाल के रूप में कार्य किया। कभी-कभी, किसी और को राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया जाता था।

लेकिन ज्यादातर मामलों में यह काम उच्च पुजारी का था। और वह कर वसूलने के लिए ज़िम्मेदार था। और फिर, टॉलेमी के लिए, जब तक कर चुकाया जाता था, तब तक यह ठीक था।

वास्तव में उन्हें बस यही चिंता थी। और इसलिए, महायाजक वह कर सकता था जो वह चाहता था। अब, यह व्यवस्था ओनियास द्वितीय के दिनों तक बहुत अच्छी तरह से काम करती रही, जो वास्तव में एक काफी प्रसिद्ध महायाजक था।

उस समय के कुछ अन्य ग्रंथों में उनकी प्रशंसा की गई है। लेकिन ओनियास द्वितीय ने टॉलेमीज़ के खिलाफ विद्रोह किया और उसने अपने करों को रोक दिया। इसका एक कारण यह है कि अफवाहें फैल रही थीं कि सेल्यूसिड्स सत्ता पर कब्ज़ा करने जा रहे हैं।

और इसलिए टॉलेमी इस बिंदु पर थोड़ा पीछे हट रहे थे और खुद को मजबूत कर रहे थे। ओनियास ने टॉलेमी की कमज़ोरी को महसूस किया। और इसलिए उसने श्रद्धांजलि को रोकने का फैसला किया ताकि यह कह सके, अरे, मैं तुम्हारे साथ हूँ सेल्यूसिड लोगों।

खैर, नेतृत्व में अपेक्षित परिवर्तन नहीं हुआ। अभी तक इस समय तक नहीं। और उल्लेखनीय बात यह है कि टॉलेमीज़ ने ओनियास द्वितीय को मृत्युदंड नहीं दिया।

टोबियाड परिवार के हाथों में सौंप दिया गया।

जिन लोगों के बारे में हम जेनॉन पपीरी में पढ़ते हैं, वे संभवतः वही परिवार हैं जिनके बारे में हम नेहेमिया की पुस्तक में पढ़ते हैं। तो अब हमारे पास फिलिस्तीन के लिए संघर्ष है। आप देखिए,

इस पूरे संघर्ष की शुरुआत से ही, सेल्यूसिड्स ने फिलिस्तीन को टॉलेमीज़ के हाथों में सौंप दिया था।

टॉलेमीज़ ने कहा कि उन्हें अपनी उत्तरी सीमाओं की रक्षा के लिए उस क्षेत्र तक पहुँच बनाने की आवश्यकता है। और इसलिए, सेल्यूकस ने टॉलेमी के साथ एक तरह का समझौता किया, जिससे उसे फिलिस्तीन को तब तक रखने की अनुमति मिल गई जब तक कि क्षेत्र में राजनीतिक रूप से चीजें ठीक नहीं हो जातीं। खैर, अब यह उस बिंदु पर आ गया है जहाँ सेल्यूसिड्स को लगता है कि वह सौदा अपना काम पूरा कर चुका है।

और इसलिए, सेल्यूसिड्स अब अपनी नज़रें दक्षिण की ओर मोड़ रहे हैं। और आपको यहाँ याद रखना होगा, सेल्यूसिड्स बार-बार पूर्वी इलाकों को खो रहे हैं। उन्होंने लगभग तुरंत ही भारत को खो दिया।

फिर, उन्होंने फारस खो दिया। फिर, उन्होंने बेबीलोन खो दिया। फिर, उन्होंने अपनी राजधानी बेबीलोन से सीरिया स्थानांतरित कर दी।

अब, उनका साम्राज्य सीरिया में केंद्रित है। और इसलिए, उन्हें लगता है कि फिलिस्तीन स्वाभाविक रूप से उनके क्षेत्र का हिस्सा होना चाहिए। और इसलिए, अनुनय सौदे काम नहीं कर रहे हैं।

टॉलेमी फिलिस्तीन को अपने पास रखना चाहते हैं। खैर, 274 से 200 ईसा पूर्व में, हमारे पास झड़पों की एक श्रृंखला है जिसे सीरियाई युद्ध के रूप में जाना जाता है। और ये आगे-पीछे होते रहते हैं, मुख्य रूप से इस बात पर लड़ाई होती है कि दोनों देशों के बीच की भूमि की पट्टी को कौन नियंत्रित करेगा।

एंटीओकस द्वितीय, टॉलेमी द्वितीय, टॉलेमी की एक बेटी से एंटीओकस की शादी करवाकर 253 ईसा पूर्व में शांति समझौते को संपन्न करने में कामयाब रहा। अब, यहाँ एक छोटी सी समस्या है। और वह समस्या यह है कि एंटीओकस की पहले से ही एक पत्नी थी।

और उस पत्नी के पहले से ही बच्चे थे। तो अब हमारे सामने एक समस्या है क्योंकि हमारे पास टॉलेमी की बेटी है, जिसके बेटे हैं, और एंटीओकस की पहली पत्नी है, जिसके बेटे हैं।

अब हमें सेल्यूसिड साम्राज्य के सिंहासन के लिए प्रतिद्वंद्वी दावेदारों की संभावना मिल गई है। और यह आने वाले वर्षों में सभी प्रकार की परेशानियों का कारण बनने जा रहा है। 204 ईसा पूर्व, टॉलेमी वी, एक पाँच वर्षीय बच्चा, मिस्र का राजा बन जाता है।

खैर, एंटीओकस III के लिए, इसका मतलब है कि अब आगे बढ़ने का समय आ गया है। और इसलिए वह तुरंत फिलिस्तीन पर नियंत्रण कर लेता है और इसे टॉलेमीज़ से छीन लेता है। तो अब क्या होता है जब देश टॉलेमीज़ के शासन से बदल जाता है, जिसे उच्च कराधान से निपटना पड़ता था, लेकिन उन्हें अपनी इच्छानुसार कार्य करने की सापेक्ष स्वतंत्रता थी, सेल्यूसिड्स के शासन के अधीन होने के लिए, जिनका अपने शासन वाले लोगों के प्रति अधिक पितृसत्तात्मक रवैया था।

खैर, सबसे पहले उसने जो काम किया, वह यह था कि उसने टोबियाद को कर संग्रहकर्ता के पद से हटा दिया और यहूदियों के नेता के रूप में महायाजक को उसके पद पर वापस कर दिया। यहूदी यही चाहते थे। सेल्यूसिड्स उन्हें खुश करना चाहते थे।

इसलिए, उन्होंने उच्च पुजारी को फिर से नियंत्रण में रखा। इसके बाद उन्होंने पोलिस प्रणाली का विस्तार करना शुरू किया। ग्रीक शैली के शहरों को स्थापित करने की प्रणाली, और उन्होंने फिलिस्तीन में ऐसा करना शुरू किया।

इससे इन शहरों को कर में छूट मिलेगी। इससे उन्हें अन्य विशेषाधिकार मिलेंगे। इससे यूनानियों को ग्रीक संस्कृति की ये छोटी-छोटी चौकियाँ भी मिल गईं।

और यहाँ शहरों का एक प्रसिद्ध समूह है जिसे डेकापोलिस के नाम से जाना जाता है, जो 10 शहरों का समूह है जो मुख्य रूप से ग्रीक थे, जिनकी स्थापना पूर्व में ग्रीक शहरों के रूप में की गई थी। वे यहाँ चारों ओर बिखरे हुए हैं। यह एक तरह से मज़ेदार है।

हम उन्हें डेकापोलिस कहते हैं, जिसका मतलब है 10 शहर, लेकिन हमेशा 10 शहर नहीं होते। और डेकापोलिस का हिस्सा बनने वाले शहरों की सूची समय-समय पर बदलती रहती है। इसलिए यह डेकापोलिस की कोई सख्त परिभाषा नहीं थी।

यह बिग टेन जैसा ही है। अब बिग टेन में कितने स्कूल शामिल हैं? शायद 14? मुझे पक्का नहीं पता। लेकिन वैसे भी, डेकापोलिस के साथ इन दिनों कुछ ऐसा ही चल रहा था।

लेकिन ये वे शहर हैं जो ग्रीक संस्कृति की चौकी बनाने, ग्रीक शिक्षा प्रदान करने, सेल्यूसिड साम्राज्य में हेलेनिज्म को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किए गए थे। खैर, अब यरूशलेम में एक आंदोलन शुरू हो रहा है। ऐसा लगता है कि लोग कह रहे हैं, आप जानते हैं, अगर यरूशलेम एक पोलिस, एक ग्रीक शैली का शहर बन जाता, तो हमें ये सभी शानदार कर छूट मिलतीं।

हमें पैसे मिलेंगे जहाँ हम कुछ चीजें बना सकते हैं, जैसे थिएटर जैसी अच्छी चीजें और जिम जैसी अच्छी चीजें, आप जानते हैं? अगर हम पोलिस बनना चुनते हैं तो हमारे शहर में सभी तरह की शानदार चीजें हो सकती हैं। और इसलिए आपके पास वह है जिसे हम हेलेनाइजिंग पार्टी कहते हैं, अगर आप चाहें तो कट्टरपंथी, जो यरूशलेम में अपनी स्थिति का दावा करना शुरू कर रहे हैं। अब, यहाँ कुछ सांस्कृतिक पहलू हैं।

यहूदियों के लिए सेल्यूसिड्स के अधीन रहने का क्या मतलब था। खैर, सेल्यूसिड शासन ने ग्रीक संस्कृति के प्रसार को प्रोत्साहित किया, जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं। कर में छूट, सार्वजनिक धन, हमें यह सब दोहराने की ज़रूरत नहीं है।

मुझे कहना होगा कि हेलेनिज्म को अपनाना, यहाँ तक कि यूनानियों द्वारा भी, असमान था क्योंकि, निश्चित रूप से, हमें यह विचार मिला है कि कुछ यूनानियों ने शुद्ध ग्रीक संस्कृति में विश्वास किया था, जबकि कुछ अन्य लोग अभी भी पूर्व और पश्चिम के मिलन के अलेक्जेंडर के

दृष्टिकोण को साझा करते थे। और इसलिए हेलेनाइजेशन के विभिन्न स्तर हो रहे थे, और ग्रीक संस्कृति के विभिन्न स्तर पूर्व में जगह पा रहे थे। हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि यहूदिया में यहूदियों और डायस्पोरा में यहूदियों के बीच एक बड़ा अंतर है।

और जब आप यहूदिया में रहते हैं, तो आप अपनी संस्कृति की सभी कलाकृतियों से घिरे होते हैं। आपके पास अपना पत्थर है जिसकी ओर आप इशारा करके कह सकते हैं, आप जानते हैं, यहीं से जोशुआ ने यह नदी पार की थी। या आपके पास यह इमारत है जिसकी ओर आप इशारा करके कह सकते हैं, यहीं पर मेरे परदादा, परदादा, परदादा, परदादा पहली बार इस भूमि पर बसे थे।

और आप अपनी जड़ों से इन जुड़ावों को महसूस कर सकते हैं। और इसलिए जो लोग अपनी मूल भूमि पर रह रहे हैं, उनके लिए सांस्कृतिक रूप से आत्मसात करने, सत्ताधारी शक्तियों की संस्कृति को अपनाने का दबाव, उदाहरण के लिए, अलेक्जेंड्रिया में रहने वाले यहूदियों की तुलना में कहीं कम तीव्र था। वहाँ, वे अपनी मूल भूमि से अलग हो गए हैं।

वे हर तरफ से बुतपरस्तों से घिरे हुए हैं। और उनके पास वे भौतिक चिह्न नहीं हैं जो उन्हें याद दिला सकें कि वे एक व्यक्ति के रूप में कौन हैं। वे ऐसे लोगों के पूरे समाज से घिरे नहीं हैं जो उनकी पहचान को मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं।

बल्कि, वे ऐसे लोगों के समाज से घिरे हुए हैं जो उनकी पहचान को कमज़ोर करने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, यहूदिया के यहूदियों ने मिस्र के यहूदियों या सीरिया के यहूदियों या अन्य क्षेत्रों के यहूदियों की तुलना में अपनी जड़ों से अपने संबंधों को बनाए रखने की अधिक संभावना थी, जहाँ वे यहूदी धर्म के इस प्रवासी समुदाय के हिस्से के रूप में बिखरे हुए हैं। ध्यान में रखने वाली एक और बात यह है कि उच्च वर्ग के यहूदियों और निम्न वर्ग के यहूदियों के बीच एक बड़ा अंतर है।

उच्च वर्ग के यहूदी व्यापार और सरकार में शामिल हैं। वे अक्सर अपने अधिपतियों के साथ व्यवहार करते हैं। वे दूसरे देशों के लोगों के साथ व्यवहार करते हैं।

सेल्यूसिड साम्राज्य और टॉलेमिक साम्राज्य में व्यापार की भाषा ग्रीक है। इसलिए, उन्हें ग्रीक भाषा का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें उन लोगों की संस्कृति से परिचित होना चाहिए जिनके साथ वे व्यवहार कर रहे हैं।

और इसलिए, उच्च वर्गों में भी ग्रीक संस्कृति को आत्मसात करने की प्रवृत्ति अधिक थी। निम्न वर्गों में, इतना नहीं। आप जानते हैं, उन पर उस तरह का दबाव नहीं था।

उनमें ग्रीक अधिपतियों की संस्कृति को अपनाने की वैसी इच्छा नहीं थी। आपको यह समझना होगा कि शायद निम्न वर्ग के लोग अपने से बेहतर लोगों, अपने कुलीनों को ग्रीक परिधानों में इधर-उधर घूमते और एक-दूसरे से ग्रीक भाषा में बात करने की कोशिश करते हुए देख रहे होंगे और सोच रहे होंगे कि ये लोग कितने मूर्ख हैं, आप जानते हैं? और शायद उन्हें थोड़ा मूर्ख भी

समझ रहे होंगे। एक और बात जो हमें ध्यान में रखनी चाहिए वह यह है कि ग्रीक संस्कृति को दिखावटी रूप से अपनाने और ग्रीक संस्कृति को पूरी तरह से अपनाने में बहुत अंतर है।

आधुनिक समय में पाए जाने वाले कपड़ों की शैलियों जैसी चीजें जब उन्होंने संस्कृतिकरण का अध्ययन किया है; उन्होंने पाया कि कपड़ों की शैलियाँ उन चीजों में से एक हैं जिन्हें लोग सांस्कृतिक संपर्क स्थितियों में आने पर काफी आसानी से अपना लेते हैं। लोग देखेंगे कि उनके पड़ोसी क्या पहन रहे हैं और कहेंगे, अरे, यह वास्तव में बहुत अच्छा है, आप जानते हैं? अगर मैं ऐसा कुछ पहनूँ तो मैं थोड़ा अजीब लग सकता हूँ, आप जानते हैं? वास्तुकला शैलियों जैसी चीजों में, हम देखते हैं कि उन प्रकार की चीजों को काफी आसानी से अपनाया जा सकता है। हम जिन अधिक महत्वपूर्ण परिवर्तनों के बारे में बात कर रहे हैं वे हैं सोचने के तरीके, धर्म के पैटर्न और सांस्कृतिक कहानियाँ।

अब, ऐसी कहानियाँ हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती हैं जो लोगों की पहचान को सुरक्षित रखती हैं। यही हमारी पहचान है। और यूनानियों की अपनी कहानियाँ थीं, यहूदियों की अपनी कहानियाँ थीं, लेकिन मैं आपको बहुत हद तक गारंटी दे सकता हूँ कि यहूदी आग के चारों ओर बैठकर एक दूसरे को हरक्यूलिस या थेसियस या पर्सियस या मिनोटौर के बारे में कहानियाँ नहीं सुनाते थे, सिवाय शायद उनका मज़ाक उड़ाने के।

नहीं, उनकी अपनी कहानियाँ थीं। उनके पास बाइबिल की कहानियाँ और अन्य कहानियाँ थीं जो यहूदियों के रूप में उनकी पहचान को सुरक्षित रखती थीं। इसलिए, हम शायद इस अवधि में यहूदियों द्वारा हेलेनिस्टिक संस्कृति, ग्रीक संस्कृति को बहुत अधिक अपनाते हुए देख सकते हैं।

और इस विषय पर कई किताबें लिखी गई हैं, जिनमें कहा गया है कि, अरे, देखो, यहूदी यूनानी बन रहे थे। नहीं, वे यूनानी नहीं बन रहे थे। यह सब दिखावा है।

और दुर्भाग्य से, कुछ हद तक, यह ऐसी चीज़ है जो पुरातात्विक रिकॉर्ड में बनी रहती है। इसलिए, आप पुरातत्व से देख सकते हैं कि इमारतों की शैली बदल गई है। आप पुरातत्व से देख सकते हैं कि कपड़ों की शैली कुछ हद तक बदल गई है।

आप देख सकते हैं कि हिब्रू और अरामी भाषा के बजाय ग्रीक भाषा में ज़्यादा शिलालेख लिखे गए थे। इन बातों से, लोगों ने अतीत में यह निष्कर्ष निकाला है कि हेलेनाइज़ेशन, यहूदियों द्वारा हेलेनिस्टिक संस्कृति को अपनाना, इस अवधि में बहुत व्यापक था। लेकिन फिर से, यह सब दिखावटी बदलाव हैं।

यह दिखावा है। ऐसा लगता है कि यहूदी आत्मा यहूदी ही रही है। और बहुत कम अपवादों को छोड़कर, यहूदी अपनी यहूदी संस्कृति में बने रहे।

यहाँ तक कि अलेक्जेंड्रिया के फिलो जैसे व्यक्ति, जो यूनानी दर्शन से बहुत परिचित थे और जो प्लेटो जैसे लोगों पर अपनी विचारधारा बना रहे थे, उन्होंने सूअर का मांस खाने से इनकार कर दिया। और दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने सूअर का मांस न खाने के लिए जो स्पष्टीकरण दिया, वह यह था कि, मुझे नहीं पता। मैंने वास्तव में कभी इसका स्वाद नहीं चखा।

लेकिन मुझे जो बताया गया है वह यह है कि यह सभी मांसों में सबसे स्वादिष्ट है। इसलिए, मुझे लगता है कि इस तरह के भोजन में हिस्सा लेना किसी तरह का अतिभोग होगा। और हम यहूदी ऐसे लोग नहीं हैं जो चीजों में अतिभोग करते हैं।

तो, हाँ। तो, फिलो के अनुसार, यहूदियों द्वारा सूअर का मांस न खाने का कारण यह था कि इसका स्वाद बहुत अच्छा होता है। हाँ।

लेकिन वैसे भी, आप यहाँ देख सकते हैं कि इतना स्पष्ट रूप से हेलेनाइज्ड होने के बावजूद, फिलो जैसे व्यक्ति के पास पुल थे जिन्हें वह पार नहीं करना चाहता था। और उसके दिल में, उसके मूल में, वह एक यूनानी के बजाय एक यहूदी बना रहा। अब, यहाँ ग्रीक भाषा के बारे में थोड़ी बात करते हैं।

जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, सेल्यूसिड्स द्वारा ग्रीक भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया था। और ग्रीक साम्राज्य की भाषा थी। और अगर आप सरकार के साथ व्यापार करने जा रहे हैं, तो आपको ग्रीक भाषा बोलनी आनी चाहिए।

या अगर नहीं बोल पाते हैं, तो किसी ऐसे व्यक्ति को अपने पास रखें जो बोल सके। दूसरी ओर, यहूदिया में ज़्यादातर यहूदी वास्तव में ग्रीक भाषा बहुत कम जानते थे। यह उन बहुत से दस्तावेज़ों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जो पीछे छोड़ दिए गए हैं।

मैं पहले ही बता चुका हूँ कि जोसेफस, भले ही एक अमीर उच्च वर्ग का यहूदी था, ग्रीक नहीं लिख सकता था। जब उसने अपनी पहली रचनाएँ लिखीं तो उसे अपना काम करने के लिए एक अनुवादक की ज़रूरत पड़ी। बाद में, वह ऐसा कर सका।

लेकिन जोसेफस ने एक दिलचस्प टिप्पणी की है। वह कहते हैं, मेरे लोगों के बीच, कई भाषाओं में महारत हासिल करना परिष्कार का संकेत नहीं माना जाता है, क्योंकि सबसे नीच गुलाम भी कई अलग-अलग भाषाओं में महारत हासिल कर सकता है।

इसलिए, वे कहते हैं, हम उन लोगों को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं जिन्होंने हमारे कानूनों और हमारी परंपराओं में महारत हासिल की है। इसलिए जोसेफस भी ग्रीक भाषा को जानना कोई बहुत बड़ी पुण्य बात नहीं मानते। उन्होंने अंततः इसे सीखा क्योंकि उन्हें यह सीखना ही था।

बेशक, हम जानते हैं कि डायस्पोरा में ग्रीक भाषा व्यापक थी, यहाँ तक कि अधिकांश यहूदियों के बीच भी। जोसेफस एक यहूदी यहूदी था और ग्रीक नहीं बोलता था। अलेक्जेंड्रिया का फिलो एक डायस्पोरा यहूदी था जो अलेक्जेंड्रिया में रहता था, और वह ग्रीक भाषा में पारंगत था।

बेशक, हम जानते हैं कि नए नियम के कई पत्र ग्रीक भाषा में लिखे गए हैं। उनमें से कुछ का अनुवाद संभवतः उन लोगों द्वारा ग्रीक भाषा में किया गया था जो मूल रूप से उन्हें लिखने वाले लोगों, यानी प्रेरितों से ज़्यादा कुशल थे। लेकिन पूरे डायस्पोरा में, अगर आप लोगों से संवाद करना चाहते थे, तो आपके पास ग्रीक भाषा या कम से कम एक अनुवादक होना ज़रूरी था।

इसलिए ग्रीक और यहूदिया निश्चित रूप से प्रतिबंधित हैं। उन दिनों सरकार के साथ व्यापार करने वाले लोग ग्रीक नाम अपनाते थे, आप जानते हैं, जो दिलचस्प था क्योंकि लगभग सभी प्रमुख व्यक्ति और यहाँ तक कि वे व्यक्ति जो यहूदी सरकार में नेता थे, यहाँ तक कि यहूदिया में भी, हिब्रू नाम और ग्रीक नाम दोनों से जाने जाते थे। ग्रीक नाम उनका सार्वजनिक नाम था, उनका व्यावसायिक नाम था।

यहूदी नाम, हिब्रू नाम वह था जो वे घर पर इस्तेमाल करते थे। इस समय शारीरिक संस्कृति में बदलाव हुए, मैंने पहले बात की थी, ये कॉस्मेटिक बदलाव हैं। ये ऐसी चीजें हैं जिन्हें बदलना सबसे आसान है।

इस अवधि में शहरी नियोजन, शहर की शैली में नाटकीय रूप से बदलाव आया। अब, हम पुराने नियम में जानते हैं कि जब भी बुजुर्ग इकट्ठा होते थे, या जब भी आप निर्णय लेने जा रहे होते थे, या जब भी आप हवा में उछलकूद करने के लिए बाहर निकलते थे, तो आप जिस स्थान पर इकट्ठा होते थे वह शहर का द्वार होता था। पुरातत्व के अनुसार, द्वार आमतौर पर एक विशाल संरचना की तरह होता था।

कभी-कभी, उन्हें इस तरह से बनाया जाता था कि आप वहाँ सामान रख सकें। कभी-कभी, आप वहाँ सेना भी रख सकते थे। लेकिन जब हम नीतिवचन की पुस्तक में पुरुषों के इकट्ठा होने के बारे में पढ़ते हैं, तो वे कहाँ इकट्ठा होते हैं? वे शहर के द्वार पर इकट्ठा होते हैं।

और जब न्याय किया जा रहा था, जब हम सुनते हैं कि शहर का व्यवसाय किया जा रहा था, फिर से, आम तौर पर शहर के द्वार पर, इन दिनों में यह बदल गया। शहर के द्वार की जगह एक शहर का चौक बन गया, जहाँ व्यवसाय संचालित किया जाता था और जहाँ लोग बातचीत करने के लिए इकट्ठा होते थे। और इस अवधि में खुदाई से, हम देख सकते हैं कि द्वार अब कोई मामला नहीं रह गए थे।

मेरा मतलब है, उनके पास अभी भी शहर की दीवारें थीं, लेकिन दरवाज़े उस तरह के नहीं थे जैसे वे पहले थे। और चौक, जो फिर से, शहर की एक ग्रीक शैली थी, इस समय वास्तुकला और पूर्वी शहरों में बहुत अधिक प्रमुख हो गई। शहर के आस-पास के शहरों में थिएटर खुलने लगे।

फिलिस्तीन का क्षेत्र। और ये भी एक तरह से दिलचस्प घटनाक्रम था। यहूदी, ज़्यादातर, ज़्यादा रूढ़िवादी यहूदी, थिएटरों पर भरोसा नहीं करते थे।

उनमें कुछ ऐसा था जो उन्हें परेशान करता था। शायद इसलिए क्योंकि वे ग्रीक समाज और ग्रीक संस्कृति से बहुत गहराई से जुड़े हुए थे। और बहुत से शहरों में थिएटर नहीं थे।

लेकिन तल्मूड में इस बारे में चर्चा थी। एक कहानी है कि एक रब्बी ने एक प्रमुख यहूदी शहर में थिएटर के निर्माण का विरोध किया। राजा ने रब्बी को अपने साथ थिएटर में चलने के लिए आमंत्रित किया, और वह उसे थिएटर में ले गया।

और जब उन्होंने एक नाट्य प्रदर्शन देखा, तो राजा ने रब्बी से पूछा, क्या आपने यहाँ कुछ ऐसा देखा है जो वास्तव में पूर्वजों के नियमों या परंपराओं के विरुद्ध है? और रब्बी को अनिच्छा से स्वीकार करना पड़ा, नहीं, मुझे लगता है कि ऐसा नहीं है। ठीक है, खैर, जो भी हो। लेकिन हाँ, न्यू टेस्टामेंट के समय तक यहूदी थिएटरों को लेकर संदेहास्पद थे।

लेकिन कई शहरों में ये थे। और फिर, ज़ाहिर है, जिमनासिया हैं, जो प्रशिक्षण और मन और शरीर के केंद्र थे। हम भवन शैली में कुछ बदलाव देखते हैं।

हम स्तंभों और कोरिंथियन कैपिटल और इस तरह की चीजों का उपयोग देखना शुरू करते हैं। उदाहरण के लिए, यह जॉर्डन का एक शहर है, गेरासा। और आप यहाँ स्तंभों के शीर्ष पर इन कोरिंथियन कैपिटल को देख सकते हैं।

अब, खंभे नए नहीं थे। पुराने दिनों में भी खंभे थे। लेकिन शीर्ष पर इस तरह की शैलीबद्ध राजधानियाँ, यह एक ग्रीक चीज़ थी।

यह सिथोपोलिस या बेथ शीन है। और यहाँ हम थिएटर देखते हैं। और वे सीटें अविश्वसनीय रूप से असुविधाजनक लगती हैं।

आप जानते हैं, लोग चर्च में सीटों के बारे में शिकायत करते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि वे वाकई बहुत मुश्किल हैं। मुझे लगता है कि वे शायद अपने तकिए खुद लाए होंगे, है न? और यहाँ फिर से, हम स्तंभों की ये पंक्तियाँ देखते हैं।

यह भी एक ग्रीक चीज़ थी। और इनमें से प्रत्येक स्तंभ के शीर्ष पर, आप कैपिटल देख सकते हैं। तो, वास्तुकला में कुछ निश्चित परिवर्तन पूर्व के लोगों और ग्रीस के लोगों के बीच संपर्क से आए।

कपड़ों की शैलियाँ। अब, यहाँ यह कुछ अलग तरह का है। परंपरागत रूप से, ये ज़्यादातर कलाकारों की प्रस्तुतियाँ हैं।

यह वास्तव में एक असीरियन दीवार नक्काशी से है। तो, यह आपको इनके बारे में एक विचार देता है, इन्हें इस दीवार नक्काशी में इज़राइली बंदी के रूप में दर्शाया गया है। और आप देख सकते हैं कि पुरुषों ने इस तरह के लंबे वस्त्र पहने थे।

महिलाओं ने लंबे वस्त्र और सिर ढकने वाले कपड़े पहने हुए थे। बच्चे ज़्यादातर समय नंगे रहते हैं। लेकिन यहाँ जो परिधान है, वह किसी कलाकार की कलाकृति है।

और मुझे लगता है कि पुराने दिनों में औसत इसराइली के लिए यह शायद बहुत ज़्यादा रंगीन है। लेकिन फिर भी, सिर पर पहना जाने वाला कपड़ा, छड़ी और इसी तरह की दूसरी चीज़ें, और आमतौर पर यहाँ कपड़ों की कुछ परतें, लबादे और इसी तरह की दूसरी चीज़ें होती हैं। यह काफी हद तक सटीक है।

अब, यूनानियों के बारे में क्या? खैर, यूनानियों के पास एक अलग तरह की पोशाक शैली थी। महिलाओं के पास ऐसी पोशाकें थीं जो बहुत ही लहराती थीं और कंधों पर पिन होती थीं। और पुरुष भी एक ऐसा लबादा पहनते थे जो अक्सर कंधों पर पिन होता था।

लेकिन ये वस्त्र मध्य पूर्व में लोगों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों से काफ़ी छोटे थे। अब, हम ज़्यादातर यह नहीं जानते कि यूनानियों के दिनों में यहूदी किस तरह के कपड़े पहनते थे क्योंकि उन दिनों किसी के पास कोई तस्वीर नहीं थी। और सच में, किसी ने हमें इसके बारे में ज़्यादा बताने की ज़हमत नहीं उठाई।

लेकिन यह वेस्पासियन का सिक्का है। वेस्पासियन वह सेनापति था जिसने 70 ई. में यरुशलम पर विजय प्राप्त की और मंदिर तथा अन्य अच्छी चीजों को जला दिया, और बाद में सम्राट बन गया। उसने यहूदिया पर अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए एक सिक्का ढाला।

इसे जूडिया कैप्टिव, जूडिया कैप्चर्ड कॉइन कहा जाता है। यहाँ, आप महिला को उसकी पोशाक में देख सकते हैं। यह एक यहूदी महिला है, और यह यहूदी महिला की प्राचीन पारंपरिक पोशाक की तरह ही दिखती है।

लेकिन यहाँ आदमी, आप देख सकते हैं, उसके पैर नंगे हैं। उसने निश्चित रूप से पारंपरिक निकट पूर्वी लंबे लबादे के बजाय हेलेनिस्टिक छोटे प्रकार के लबादे को अपनाया है। इसलिए, कम से कम 70 ई. तक, कपड़ों की शैली में कुछ हद तक बदलाव आया है।

हम इसे कुछ इस्राएली राजाओं के चित्रण में भी देख सकते हैं, जो उन कुछ लोगों में से हैं जिनकी तस्वीरें हमारे पास हैं। यह राजा येहू की तस्वीर है जो असीरियन राजा के सामने झुक रहा है। और उसके पास एक तरह की टोपी है जिसे वे फ़िजियन टोपी कहते हैं, आप जानते हैं।

यह एक तरह की मुलायम टोपी थी जो किनारे पर लटकती रहती थी। यह फ़्रांसीसी क्रांति के दौरान बहुत लोकप्रिय हो गई थी। लेकिन आप देख सकते हैं कि यह फ़्रांसीसी क्रांति से बहुत पहले आई थी।

यहाँ एक चित्रण है, मेरा मानना है कि यह राजा सुलैमान का होना चाहिए था। ऐसा लगता है कि यह वहाँ उनका मंदिर है। लेकिन यह, निश्चित रूप से, बहुत बाद के समय का एक कलाकार का चित्रण है।

लेकिन यहाँ, उसी शंकाकार मुकुट का उपयोग किया गया है। हम अन्य क्षेत्रों के कुछ चित्रणों में इन इतिहासिक मुकुटों को देखते हैं। यह राजा हेरोदेस, हेरोदेस महान है।

और आप देखेंगे कि उसने अपने सिर पर क्या पहना हुआ है। शंकाकार मुकुट नहीं, फ़्रीजियन टोपी नहीं। बल्कि, उसने लॉरेल पुष्पमाला पहनी हुई है, जो ग्रीक और रोमन राजा अपने सिर को सजाने का तरीका था।

इसलिए, हेरोदेस को ग्रीक और रोमन मंडलियों में बहुत घूमना पड़ता था, इसलिए उसने सिर पर पहनने के लिए इस शैली को अपनाया, जो कि यूनानियों के बीच आम तौर पर इस्तेमाल की जाती थी। घरेलू सामान। अब, यह एक और दिलचस्प तरह का बदलाव है जिसे हम होते हुए देखते हैं।

यह पुराने दिनों के एक इज़राइली घर का कलाकार द्वारा किया गया पुनर्निर्माण है। और यह इस बारे में अच्छी तरह से जाना जाता है कि वे ये चीज़ें कैसे करते थे। आप जानते हैं, घर के निचले स्तर पर आमतौर पर जानवरों को रखा जाता था।

और फिर यहाँ एक खुला आँगन होगा जहाँ वे खाना बनाते थे और इस तरह के दूसरे काम करते थे। फिर, ऊपर की मंजिल पर लोग आमतौर पर सोते थे। वे कहाँ बैठते थे? अच्छा, आपको यहाँ कोई कुर्सियाँ नहीं दिख रही हैं, है न? वे कहाँ बैठते हैं? वे फर्श पर बैठते हैं।

यह आम ग्रीक घराने से अलग है। मेरा मानना है कि यह फ़िज़ शायद पॉम्पेई से है। लेकिन यहाँ, आप एक छोटे से टेबल के चारों ओर बैठे एक परिवार को देख सकते हैं।

इस समय, वे किसी ऊँची सीट पर बैठे हैं - हमारी आधुनिक कुर्सियों की तरह नहीं - बल्कि आप जानते हैं, देखिए, एक कुशन पर।

यह ज़्यादा आरामदायक लगता है, है न? यह एक बर्तन पर भोजन का ग्रीक चित्रण है। यह उन कुछ में से एक है जो मैं आपको दिखा सकता हूँ क्योंकि यह अश्लील नहीं है - उनमें से ज़्यादातर अश्लील होते हैं।

लेकिन वैसे भी, इस तस्वीर में हम देख सकते हैं कि लोग बेंचों पर लेटे हुए हैं और नौकर उन्हें खाना परोस रहे हैं। और यह यूनानियों के लिए भोजन करने का एक आम तरीका भी था। एक आज़ाद आदमी अपनी तरफ़ से लेटे हुए भोजन करता था और नौकर आकर उसे खाना लाकर देते थे।

अब, आइए इसकी तुलना यीशु के समय के एक दृश्य से करें। यीशु अंतिम भोजन के समय मेज़ पर लेटे हुए थे। और इसलिए, हम देखते हैं कि फर्श पर पैर मोड़कर बैठने की पुरानी, पारंपरिक शैली की जगह अब बेंचों पर बैठने या भोजन करते समय बेंचों पर लेटने की अधिक ग्रीक शैली ने ले ली है।

फिर से, दिखावटी। आप जानते हैं, यहाँ वास्तव में कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। ऐसा नहीं है कि वे बेंच पर बैठकर एक-दूसरे को होमर पढ़ रहे हैं।

बेकन या कुछ और खाना। चलिए यहाँ पारिवारिक संरचना के बारे में भी बात करते हैं, क्योंकि यह थोड़ा ज़्यादा महत्वपूर्ण है। हम पूर्व के विवाह रीति-रिवाजों पर ग्रीक प्रभावों के बारे में क्या जानते हैं? मैंने कई बार इस तथ्य का उल्लेख किया है कि, ज़्यादातर मामलों में, ग्रीक लोग अपने परिवारों को छोटा रखना पसंद करते थे।

इसके अलावा, यूनानी लोग आम तौर पर सिर्फ एक पत्नी से विवाह करते थे। उनकी कई रखैलें और कई प्रेमी होते थे। कभी-कभी दोनों लिंगों के प्रेमी होते थे, यह इस बात पर निर्भर करता था कि आपकी सामाजिक स्थिति कैसी थी।

लेकिन जहाँ तक परिवार की बात है, एक ग्रीक परिवार में एक बच्चा होता है, शायद दो, खासकर अगर वह बेटा हो। अगर आपका पहला बच्चा बेटा है, तो शायद आपको दूसरा बच्चा नहीं चाहिए। और जिस तरह से वे इससे निपटते थे, वह आमतौर पर शिशुहत्या के ज़रिए होता था।

क्योंकि, उन दिनों में जन्म नियंत्रण उतना प्रभावी नहीं था। लेकिन ग्रीस में महिलाओं की स्थिति उल्लेखनीय है। मैं अक्सर अपने छात्रों से एक सवाल पूछता था, मुझे बताओ, क्या आपको लगता है कि पुराने नियम के समय में महिलाओं की स्थिति अधिक थी या नए नियम के समय में? और हमेशा, मेरे छात्र कहते थे, नया नियम, बेशक, क्योंकि हमारे पास यीशु महिलाओं से बात करते हैं और महिलाएँ उनके मंत्रालयों के साथ उनके पीछे चलती हैं और इसी तरह।

मैं कहता हूँ, कोई मौका नहीं, कोई मौका नहीं। क्योंकि नीतिवचन 31 की महिला और उसके द्वारा किए जा रहे कुछ कामों को देखिए, वह खेतों पर विचार कर रही है और उन्हें खरीद रही है।

ग्रीक महिलाएं ऐसा नहीं कर सकती थीं। हेलेनिस्टिक संस्कृति में, ग्रीक महिलाओं को अपने पति की मंजूरी के बिना अनुबंध करने की अनुमति नहीं थी। और यहां तक कि अपने पति की मंजूरी के बाद भी, वे शायद ही कभी अनुबंध करती थीं।

वह पुराने नियम के समय में नौकर खरीदती या नौकर किराए पर लेती है और उन्हें अपने घर में काम करवाती है। वह अपने बच्चों द्वारा सम्मानित महसूस करती है। बहुत सी ऐसी चीजें हैं जो ग्रीक महिलाओं को अपने घर में होने पर बहुत अच्छा लगता था।

यहूदी महिलाएँ पुराने नियम के समय में इन चीज़ों का आनंद ले रही थीं। और इनमें से कुछ चीज़ें उन पर भी असर डाल रही थीं। ग्रीक संस्कृति में व्याप्त वास्तविक स्त्री-द्वेष के कुछ विचार उन पर भी असर डाल रहे थे।

मानवविज्ञानियों के बीच इस बात को लेकर कई अटकलें हैं कि इनमें से कुछ चीज़ें कहाँ से आईं। और एक व्याख्या यह है कि ग्रीक मिट्टी वास्तव में बहुत खराब थी। और इसलिए, क्योंकि ग्रीक मिट्टी इतनी खराब थी कि यूनानियों को ऐसा लगता था कि वे लगातार भुखमरी के कगार पर थे।

और इसी वजह से उन्हें छोटे परिवार रखने पड़ते थे। लड़कों के साथ यौन संबंधों के लिए प्रसिद्ध ग्रीक प्रवृत्ति के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। आपको लड़कों के गर्भवती होने की चिंता नहीं करनी पड़ती थी।

तो, किसी भी दर पर, परिवार के आकार की यह शैली हेलेनाइज्ड दुनिया के अधिकांश हिस्सों में फैलने में कामयाब रही - हालाँकि, यहूदियों के बीच इतनी नहीं। यहूदियों के लिए, परिवार और बहुत सारे बच्चे होना उनकी सबसे बड़ी खुशियों और आशीर्वाद के महान संकेतों में से एक रहा: भगवान ने उन्हें बहुत सारे बच्चे दिए।

इसलिए, वे कई बच्चे पैदा करते रहे। हम नए नियम से पाते हैं कि बहुविवाह का विचार खत्म होने लगा था। अब, प्राचीनों के लिए पॉल की एक आवश्यकता यह है कि उन्हें एक पत्नी का पति होना चाहिए।

हमने इसे पढ़ा, और लोगों ने कहा, पॉल कह रहा है कि आप तलाक नहीं ले सकते। नहीं, वह सचमुच कह रहा है कि आप तीन या चार पत्नियाँ नहीं रख सकते। तल्मूड ने एक यहूदी आदमी को तीन पत्नियाँ रखने की अनुमति दी, लेकिन उस समय उनमें से बहुत कम ने ऐसा किया।

इसलिए, छोटे परिवार की शैली, इतनी लोकप्रिय नहीं हुई, लेकिन एक विवाह और एक पत्नी की शैली, वह कुछ हद तक लोकप्रिय हो रही थी। अब, बहुत संभावना है, एक ही पत्नी हमेशा इज़राइल में आदर्श थी, यहां तक कि पुराने दिनों में भी। जाहिर है, आपके पास राजा और अन्य लोग थे जिनकी कई पत्नियाँ थीं।

लेकिन अगर आप बाइबल पढ़ेंगे, तो आप पाएंगे कि आम तौर पर, जब आपकी एक से ज़्यादा पत्नियाँ होती हैं, तो आपको परेशानी होती है। वे एक-दूसरे के खिलाफ़ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। वे एक-दूसरे के खिलाफ़ साज़िश रच रही हैं।

आमतौर पर, किसी न किसी को रिश्ते में चोट लगती ही है। एक अकेली पत्नी हमेशा से आदर्श रही है, यह बात आदम और हव्वा जैसे मौज-मस्ती करने वाले जोड़े से भी जुड़ी है। और जब यीशु से, बेशक, विवाह के बारे में पूछा जाता है, तो वह कहता है, भगवान कहते हैं, एक दूसरे के लिए नर और मादा को बनाया, वगैरह, वगैरह, वगैरह।

लेकिन निश्चित रूप से, विवाह की प्रथाओं में बदलाव ग्रीक लोगों द्वारा एक विवाह पर जोर दिए जाने से प्रेरित या प्रोत्साहित था। दहेज प्रथा एक और तरीका दिखाती है कि महिलाओं की स्थिति बदल गई थी। पुराने नियम में, अगर आप पत्नी पाना चाहते थे, तो आपको पिता को पैसे देने पड़ते थे, आप जानते हैं कि अगर आपकी कोई हैसियत थी।

वैसे, पत्नी और उपपत्नी के बीच यही एक बड़ा अंतर था। पत्नी पाने के लिए आपको आमतौर पर दहेज देना पड़ता था। बल्कि, आपको वधू-मूल्य देना पड़ता था।

आपको अपनी पत्नी को पाने के लिए पैसे देने पड़ते थे। और कभी-कभी दुल्हन की कीमतें बहुत ज़्यादा होती थीं, जैसे कि राजा दाऊद के मामले में जब वह शाऊल की बेटी मीकाएल को अपनी पत्नी बनाना चाहता था। उसे दुल्हन की कीमत में दुश्मनों के शरीर के कई अंग रखने पड़ते थे।

लेकिन वैसे भी, दुल्हन की कीमत एक तरह से, उस महिला का सम्मान करने का तरीका था जो शादी में आ रही है। यह दर्शाता है कि महिला को योग्य माना जाता है और ऐसी चीज जिसे पाने के लिए आप प्रयास करना चाहते हैं, जिसे पाना चाहते हैं, और जिसे पाने के लिए आप अपना पैसा खर्च करने लायक हैं। जैसा कि मैंने कहा, रखैलों के लिए आमतौर पर दुल्हन की कीमत नहीं होती थी, और यही एक कारण है कि उन्हें दूसरी श्रेणी की पत्नियाँ माना जाता था।

यूनानियों की दहेज प्रथा थोड़ी अलग थी। दहेज प्रथा में, आपको अपनी बेटी को अपने हाथों से लेने के लिए पति को पैसे देने पड़ते हैं। जी हाँ।

तो, यही कारण है कि यूनानियों को बेटियाँ रखना पसंद नहीं था, क्योंकि वे बेटियों को एक तरह की वित्तीय ज़िम्मेदारी मानते थे। क्योंकि जब आप उनके लिए पति ढूँढ़ते हैं, तो आपको उन्हें लेने के लिए किसी को पैसे देने पड़ते हैं। तो, यह एक ऐसी प्रथा थी जिसे अब हम यहूदियों द्वारा अपनाए जाने के रूप में देखते हैं।

और हमारे पास इस युग के कई दस्तावेज हैं, जिनमें हम देखते हैं कि महिलाएं अपने विवाह में किस तरह का दहेज लेकर आती थीं। तो, इस अवधि के दौरान यहूदी धर्म में भी महिलाओं की स्थिति निश्चित रूप से कम होती जा रही है। एक और चीज जो हम देखते हैं वह है तलाक का वास्तविक प्रसार।

हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं कि एलिफेंटाइन, पपीरी और फारसी काल में तलाक निश्चित रूप से एक समस्या थी। ग्रीक युग में यह और भी बड़ी समस्या बन गई।

और फिर, हम कई अभिलेख पा सकते हैं, बाबाथा अभिलेखागार नामक ग्रंथों का एक संग्रह है, जो लगभग 130 ई. से आता है। लेकिन हम देखते हैं कि इस महिला बाबाथा का कई बार तलाक हुआ था। और दिलचस्प बात यह है कि वह एक बहुत अमीर महिला थी।

और कुछ तलाक की पहल उसने की। जबकि यह अलग बात थी क्योंकि, आप जानते हैं, यहूदी रीति-रिवाजों में, केवल पति ही अपनी पत्नी को तलाक दे सकता था। पत्नियों को अपने पतियों को तलाक देते देखना असामान्य था।

लेकिन यह हो रहा था। तो, हाँ। लेकिन तलाक एक बहुत ही आम बात और एक अपेक्षित चीज़ बन रही थी।

आपने अपने विवाह अनुबंध में यह लिखा होगा कि तलाक के मामले में प्रत्येक पक्ष को कितना पैसा मिलेगा। और यह उम्मीद की जाती थी कि चीज़ें इसी तरह आगे बढ़ेंगी। कम से कम यहूदी धर्म में बच्चों का महत्व ग्रीक संस्कृति के प्रसार से प्रभावित नहीं हुआ।

जैसा कि मैंने कहा, यहूदियों को हमेशा बहुत सारे बच्चे पसंद थे। यहूदियों को बहुत सारे बच्चे पसंद थे। और यहूदियों के बारे में जो बात यूनानियों और रोमियों को सबसे ज़्यादा परेशान करती थी, वह यह थी कि उनके परिवार बहुत बड़े थे।

हर जगह यहूदियों की संख्या बहुत ज़्यादा थी। यहूदियों की संख्या ने ही उन्हें यूनानियों के साम्राज्यों और फिर बाद में रोमन साम्राज्य में एक ताकत बना दिया। धर्म और दर्शन के बारे में क्या ख्याल है? अब हम फिर से कुछ दिलचस्प विषयों पर बात कर रहे हैं।

हम कुछ सबूत देखते हैं कि कुछ यहूदियों ने, खासकर डायस्पोरा में, कुछ यूनानी विचारों को अपनाया। हम पहले ही एलेक्जेंड्रिया के फिलो के बारे में काफी बात कर चुके हैं, यह दार्शनिक

मूल रूप से प्लेटो के साथ बाइबिल को समेटना चाहता था और ऐसा करने के लिए इस अद्भुत, अद्भुत, चतुर प्रणाली के साथ आया था।

लेकिन हम बाइबिल की व्याख्या की प्रणालियाँ और इसी तरह की अन्य प्रणालियाँ देखते हैं, जो साहित्यिक व्याख्या की कुछ यूनानी शैलियों का भी अनुसरण करना शुरू कर देती हैं। इसलिए, हम देखते हैं कि कई चीजें होने लगी हैं, खास तौर पर डायस्पोरा यहूदियों के बीच, जो दिखाती हैं कि वे यूनानियों को पढ़ रहे हैं, उनकी बात सुन रहे हैं और कुछ मायनों में यूनानी विचारों के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश कर रहे हैं। यरुशलम में, हम देखते हैं कि यह हेलेनाइजिंग पार्टी यरुशलम शहर में ही यूनानी विचारों को पेश करने की कोशिश कर रही है।

वे कितने सफल हैं? खैर, यह आगे-पीछे होता रहता है। मुख्य रूप से यहाँ उनकी प्रेरणा यह नहीं है कि वे सोचते हैं, ओह, ग्रीक संस्कृति बहुत बढ़िया है, यार। यह मुख्य रूप से है, अरे, उन सभी चीजों के बारे में सोचो जो हमें ग्रीक बनने पर मिल सकती हैं, आप जानते हैं? अगर हम ग्रीक की तरह काम करना और ग्रीक की तरह रहना शुरू कर दें, तो हमें सभी लाभ मिलने वाले हैं, आप जानते हैं? हम अपने करों में कटौती करवाने जा रहे हैं।

हम इन महान इमारतों का निर्माण करने जा रहे हैं। इसलिए, ऐसा लगता है कि हेलेनाइजिंग पार्टी मुख्य रूप से वैचारिक चिंताओं से नहीं बल्कि लालच से प्रेरित थी। इसलिए उनके सुधार कितने गहरे थे, यह कहना मुश्किल है।

हम जानते हैं कि कुछ ऐसे पहलू थे जिनके बारे में हम थोड़ी देर बाद बात करेंगे। लेकिन इस प्रगतिशील पार्टी के एक उच्च पुजारी ने, जैसा कि हमें बताया गया है, यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की कुछ बाधाओं को तोड़ दिया। इनमें से कुछ कथन हमारे लिए बहुत अस्पष्ट हैं।

मैकाबीज़ की पुस्तक में लिखे गए थे, तो उन्हें ठीक से पता था कि वे किस बारे में बात कर रहे थे। हालाँकि, अब उन्हें पढ़ते हुए, हम वास्तव में नहीं जानते कि वे किस बारे में बात कर रहे थे। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यरूशलेम में इस हेलेनाइजिंग चरण के दौरान, गैर-यहूदी लोग मंदिर के भीतरी प्रांगणों में भी यहूदी उपासकों के साथ स्वतंत्र रूप से घुलने-मिलने में सक्षम थे।

तो, कुछ ऐसी चीजें हैं जो बाद के यहूदियों और पहले के यहूदियों ने देखी होंगी और कहा होगा, यह ठीक नहीं है। फिर से, हमारे पास इस बात के बहुत कम सबूत हैं कि यहूदिया में ही व्यापक समन्वयवाद था। हमारे पास शिलालेख हैं, उदाहरण के लिए पत्थरों से बने यहूदी अंतिम संस्कार, जो ग्रीक में खुदे हुए हैं।

और विद्वानों ने सदियों से इस बात के प्रमाण के रूप में इनका हवाला दिया है कि यहूदी अपनी समझ में ज्यादा यूनानी होते जा रहे थे। अब, वे इस बात के प्रमाण हैं कि पत्थर तराशने वाले लोग और शायद सबसे अच्छे पत्थर तराशने वाले, यूनानी थे और ग्रीक भाषा में पारंगत थे। इसलिए, मैं नहीं देखता, नहीं देख सकता, कि यह इस बात का वास्तविक प्रमाण है कि फिलिस्तीन के यहूदियों द्वारा यूनानी संस्कृति को किसी हद तक अपनाया जा रहा था।

दर्शनशास्त्र के बारे में क्या ख्याल है? यह काफी रोचक है। यहूदियों के लिए किसी यूनानी का सबसे पहला संदर्भ अब्देरा के हेकेटियस नामक व्यक्ति से मिलता है। उसका काम अब तक नहीं बचा है।

बाद की कुछ रचनाओं में सिर्फ कुछ अंश हैं, लेकिन अब्देरा के हेकेटियस ने यहूदियों को दार्शनिकों की एक जाति के रूप में वर्णित किया है। यह यहूदियों पर पहली यूनानी टिप्पणी है।

और जाहिर है वह एक विश्व यात्री था। वह यहूदिया गया। उसने उनका मंदिर देखा।

उसने देखा कि वहाँ कोई मूर्तियाँ नहीं थीं। उसने यहूदियों के व्यवहार, उनके नियम, उनकी नैतिकता आदि को देखा। और इसलिए, उसने निष्कर्ष निकाला कि यहूदी दार्शनिकों की एक जाति थे, जो उस लोगों के बारे में सोचने का एक उल्लेखनीय तरीका है।

प्रवासी यहूदी दार्शनिक थे। और एलेक्जेंड्रिया के फिलो इनमें से सबसे प्रसिद्ध हैं। फिलो को कुछ अन्य दार्शनिकों के बारे में भी पता था जो उससे भी आगे तक गए थे।

उदाहरण के लिए, वह यहूदियों के बारे में जानता था जिन्होंने कानूनों को इस हद तक आध्यात्मिक बना दिया था कि वे सूअर का मांस खाने में सक्षम थे। लेकिन वह खुद, निश्चित रूप से, सोचता था कि यह बहुत दूर जा रहा था। लेकिन वैसे भी, ऐसे लोग थे जो प्रवासी समुदाय में रह रहे थे जो मूल रूप से बहुत ही हेलेनाइज्ड तरीके और बहुत ही हेलेनाइज्ड सोच प्रणाली अपना रहे थे।

लेकिन फिलिस्तीनी यहूदियों के बीच, वास्तव में ग्रीक दर्शन के किसी भी प्रकार के ज्ञान का कोई सबूत नहीं है। कभी-कभी विद्वान एक बात बताते हैं कि मिश्राह, तीसरी शताब्दी ईस्वी की यहूदी पवित्र पुस्तक, होमर के लेखन का उल्लेख करती है। खैर, इसमें होमर के लेखन का उल्लेख है, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि उन्हें होमर के लेखन में क्या था, इसका थोड़ा सा भी अंदाजा था।

वे जानते थे कि होमर मौजूद थे। वे जानते थे कि यूनानियों को होमर बहुत पसंद था, लेकिन वे यह भी जानते थे कि यहूदी ज़्यादातर होमर नहीं पढ़ते थे। इसलिए, अगर होमर को ग्रीक संस्कृति का प्रतीक माना जाता था, हर ग्रीक लड़का होमर को पढ़ते हुए बड़ा हुआ था, अगर होमर के लेखन को यहूदियों द्वारा पहचाना या जाना भी नहीं जाता था, तो हम कल्पना नहीं कर सकते कि फिलिस्तीनी यहूदी धर्म में ग्रीक शिक्षा बहुत आगे तक पहुँच गई थी।

एक चीज़ जो यहूदियों ने अपनाई वह थी ज्योतिष विद्या। और यह काफी दिलचस्प है। ज्योतिष विद्या बेशक एक बहुत पुरानी प्रथा है।

इसकी शुरुआत बेबीलोन में हुई थी। दरअसल, यूनानियों को बेबीलोन के लोगों के बारे में जो बात सबसे ज़्यादा पसंद थी, वह यह थी कि वे उन्हें ज्योतिष के जनक मानते थे। जोसेफस ने यह दावा करने की कोशिश की कि अब्राहम ज्योतिष के जनक थे और उन्होंने इसे बेबीलोन और मिस्र के लोगों को सिखाया था, इत्यादि।

लेकिन नहीं, हम जानते हैं कि इसकी उत्पत्ति बेबीलोन में हुई थी। बेबीलोन का ज्योतिष आज के ज्योतिष से अलग था। आप जानते हैं, आज हम अपना अखबार लेंगे, और उसे खोलेंगे, और कहेंगे, ओह, देखते हैं कि आज कुंभ राशि के साथ क्या होने वाला है।

और आप अपनी कुंडली देखेंगे और देखेंगे कि आज आप किसी लम्बे, काले, सुन्दर अजनबी या जो भी हो, से मिलेंगे। बेबीलोन का ज्योतिष अलग था। बेबीलोन का ज्योतिष मुख्य रूप से आकाश में संकेतों के अवलोकन के बारे में था।

इसका एक कारण यह है कि वे मानते थे कि इनमें से कई सूक्ष्म शरीर देवता थे। और इसलिए, अगर कुछ अजीब हुआ, जैसे कि आप कहते हैं, आकाश में एक तारा चमकता हुआ देखते हैं, तो यह एक संकेत होना चाहिए कि देवता कुछ करने की योजना बना रहे हैं। ठीक है, और इसलिए हमारे पास ऐसे ग्रंथ हैं जो आकाश के विभिन्न क्षेत्रों और क्षेत्रों में गड़गड़ाहट के महत्व या विभिन्न ग्रहों की चाल आदि के बारे में बात करते हैं।

तो मूल रूप से यह क्या था, यह शकुनों के अवलोकन के बारे में था। बाइबिल को ज्योतिष बहुत पसंद नहीं था। हाँ, यशायाह और यिर्मयाह दोनों में ऐसे अंश हैं जहाँ वे बेबीलोन के ज्योतिषियों का मज़ाक उड़ाते हैं।

वे उन्हें किसी भी तरह से भरोसेमंद नहीं मानते। और वास्तव में, ज्योतिष कुछ मायनों में बुतपरस्त पूजा से जुड़ा हुआ था, क्योंकि इसके पीछे की विचारधारा का एक हिस्सा यह है कि आकाशीय पिंड देवता हैं। आप जानते हैं, सुबह का तारा देवी इश्तार और इस तरह की चीजें हैं।

इसलिए, यदि आप यह नहीं मानते कि तारे कुछ और हैं, आप जानते हैं, तारे, कि ईश्वर ने उन्हें आकाश में रोशनी के रूप में बनाया है, उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार, तो वास्तव में ज्योतिष की नींव ढह जाती है। लेकिन फिर यूनानी आए। यूनानियों ने बेबीलोनियों से ज्योतिष को अपनाया, लेकिन उन्होंने इसे एक अलग आधार पर रखा।

देखिए, यूनानियों के अनुसार, ज्योतिष वास्तव में वैज्ञानिक था। यह ब्रह्मांड की उनकी अवधारणा पर आधारित है। और यह वास्तव में, मेरा मतलब है, प्लेटो की तरह था, प्लेटो नहीं, बल्कि अरस्तू एक तरह का व्यक्ति था जिसने वास्तव में ब्रह्मांड की इस समझ को विकसित किया।

यह विचार कि आपके पास ब्रह्मांड के केंद्र में पृथ्वी है, और फिर आपके पास ये गोले हैं जो पृथ्वी के चारों ओर घूमते हैं। तो, इनमें से प्रत्येक गोले की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। पहला गोला वायुमंडल है।

और फिर पृथ्वी के चारों ओर आने वाला अगला क्षेत्र है, जिसमें आपको स्वर्ग मिलता है, और फिर आपको यहाँ ऊपर आकाशीय पिंड मिलते हैं। और जैसे-जैसे ये सभी क्षेत्र घूमते और घूमते हैं, वे अलग-अलग तरह की दरों पर घूमते हैं। और आपने शायद यह मुहावरा सुना होगा, गोले का संगीत, आप जानते हैं? खैर, विचार यह था कि जब ये क्षेत्र एक-दूसरे के चारों ओर घूम रहे थे, तो यह इस तरह का स्वर्गीय संगीत पैदा करेगा जो ब्रह्मांड के अंतर्निहित स्वर थे।

यह एक प्यारा रोमांटिक विचार है, लेकिन निश्चित रूप से, आप जानते हैं, पूरी तरह से अवैज्ञानिक है। वैसे भी, लेकिन धारणा यह है कि अगर आपके पास दो शरीर एक दूसरे के खिलाफ रगड़ रहे हैं, और चीजें होती हैं, है ना? यह गर्म हो सकता है, और आप कुछ त्वचा और इस तरह की चीजें पहन सकते हैं। इसलिए, यदि आपके पास एक क्षेत्र है जो इस तरह से दूसरे क्षेत्र के खिलाफ रगड़ रहा है, तो यह प्रभावित होने वाला है कि इसके नीचे के क्षेत्र में क्या होता है।

और इसलिए, यूनानियों का कहना है, ठीक है, यह इन पिंडों की इन क्षेत्रों में ऊपर की ओर की गतिविधियाँ हैं, जो नीचे पृथ्वी पर होने वाली चीजों का कारण बन रही हैं। और इसलिए, देखिए, ज्योतिष विज्ञान वैज्ञानिक है। अब, उन्होंने विभिन्न नक्षत्रों के महत्व, नक्षत्रों के एक दूसरे के साथ बातचीत करने के तरीके और विभिन्न नक्षत्रों में देखी जाने वाली घटनाओं के बारे में सिद्धांत विकसित करना शुरू कर दिया है।

वे कैलेंडर को अलग-अलग ज्योतिषीय संकेतों में विभाजित करने के इन विचारों को विकसित करना शुरू करते हैं और इसी तरह। यह सब वापस आ रहा है, ब्रह्मांड के उनके विचारों के आधार पर यूनानियों के पास वापस जा रहा है। अब, यहाँ एक अलग बात के रूप में, अगर हम देख सकते हैं कि इन यूनानी विचारों का आधार हास्यास्पद था, तो हम यह भी देख सकते हैं कि यह कितना हास्यास्पद है कि लोग आज भी ज्योतिष का उपयोग करना जारी रखते हैं क्योंकि यह अभी भी उतना ही अवैज्ञानिक है जितना कि यूनानियों के दिनों में था।

वैसे भी, यहूदियों ने अनिच्छा से, ऐसा लगता है, ग्रीक ज्योतिष को अपनाना शुरू कर दिया। लेकिन डेड सी स्कॉल में, हमारे पास कई कुंडली हैं जो आपके सामान्य ग्रीक कुंडली से थोड़ी अलग हैं। मूल रूप से, ये कुंडली यह भविष्यवाणी करती थीं कि लोगों का जन्म के समय किस प्रकार का चरित्र होगा।

यह सुनने में ऐसा लगता है कि यह हमारे समय में किसी दुकान में मिल जाएगा। लेकिन हाँ, ये डेड सी स्कॉल से जुड़े हैं और इनका संबंध यूनानियों द्वारा अपने समय में ज्योतिष के साथ किए जाने वाले कामों से है। यह 5वीं शताब्दी ई. से है।

यह एक आराधनालय का फर्श है जिसे संरक्षित किया गया है। और यह उल्लेखनीय है क्योंकि ये वास्तव में राशि चक्र के चिह्न हैं जिनके ऊपर हिब्रू में उनके नाम लिखे हैं। इन्हें पढ़ना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन ये राशि चक्र के वही चिह्न हैं।

देखिए, आपको पता है, हमारे पास मछली है, यहाँ सिंह है, हमारे पास वृश्चिक है। तो, ये सभी विभिन्न मिथुन राशि, जुड़वाँ, आदि, आदि, ये सभी प्राचीन ज्योतिषीय चिह्न यहाँ 5वीं शताब्दी ईस्वी से फिलिस्तीन में एक आराधनालय के फर्श पर दर्शाए गए हैं। इस बारे में उल्लेखनीय बातों में से एक यह है कि यीशु के समय में, ठीक है, यीशु के समय में नहीं, लेकिन यीशु के समय के तुरंत बाद, मंदिर और अन्य सार्वजनिक भवनों में जानवरों की छवियों के उपयोग को लेकर यहूदिया और यरूशलेम में दंगे हुए थे।

क्योंकि, उस समय, जानवरों का किसी भी तरह का चित्रण मूर्तिपूजा माना जाता था। यहाँ, 5वीं शताब्दी ई. तक, यह उनके आराधनालयों के अंदर भी था। तो, कौन कहता है कि वे थोड़ा बहुत बदलाव नहीं कर सकते, है न? वैसे भी, हम यहाँ जो देखते हैं वह यह है कि ग्रीक संस्कृति में, या बल्कि यहूदी संस्कृति में, यूनानियों के संपर्क से जो बदलाव हुए, वे ज़्यादातर दिखावटी बदलाव थे, वास्तव में कुछ भी बहुत ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं था, ज्योतिष और कुछ अन्य ग्रीक परिधानों को अपनाने जैसी चीज़ों के कुछ संभावित अपवादों के साथ।

लेकिन अधिकांश भाग के लिए, यहूदियों ने अपनी पैतृक परंपराओं और उन चीज़ों को दृढ़ता से थामे रखा जो उनके लिए वास्तव में महत्वपूर्ण थीं, प्रभु के नियम और पूर्वजों की परंपराएँ, फिलिस्तीन में यहूदी, कम से कम, हम कह सकते हैं, उन परंपराओं और उस संस्कृति को बहुत दृढ़ता से और बहुत दृढ़ता से पकड़े हुए थे।

यह डॉ. एंथनी टॉमसिनो द्वारा यीशु से पहले यहूदी धर्म पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 6 है, यूनानी शासन के तहत यहूदी।